



भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
वित्तीय सेवाएँ विभाग

मंतव्य

अंक : 3, वर्ष : 2018-19



वर्ष 2017-18 के दौरान राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए मंत्रालयों/विभागों की श्रेणी के अंतर्गत माननीय उप राष्ट्रपति से प्रथम पुरस्कार (राजभाषा कीर्ति) प्राप्त करते हुए श्री राजीव कुमार, सचिव, वित्तीय सेवाएँ विभाग



सरकारी काम-काज डिजिटल की ओर अग्रसर है, इसी की एक कड़ी विभागीय ई-पत्रिका “मंतव्य” है। विभागीय ई-पत्रिका के द्वारा न केवल हमें विभाग की राजभाषा संबंधी गतिविधियों को कलमबद्ध करने का अवसर प्राप्त होता है बल्कि इसमें विभाग की मुख्य उपलब्धियां भी लोगों तक पहुंचती हैं। इस वर्ष 14 सितम्बर, 2018 को आयोजित हिंदी दिवस समारोह में विभाग को राजभाषा नीति के सर्वोत्तम कार्यान्वयन के लिए वर्ष 2017-18 का मंत्रालयों/विभागों की श्रेणी में प्रथम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ है, यह हमारे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है। विभाग को प्रदत्त राजभाषा कीर्ति पुरस्कार में ई-पत्रिका “मंतव्य” का भी योगदान रहा है।

6 जुलाई, 2018 को पटना में आयोजित समीक्षा बैठक में बैंकों में हिंदी पदों में एकरूपता लाने के साथ-साथ बीमा कंपनियों में भी हिंदी पदों में एकरूपता लाने का निर्णय लिया गया जिससे कि विभाग के नियंत्रणाधीन सभी कार्यालयों में भी राजभाषा कार्यान्वयन को गति मिल सके। इस दृष्टि से उन सभी बैंकों विशेषकर पंजाब नेशनल बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, बैंक ऑफ महाराष्ट्र, विजया बैंक और इंडियन बैंक को इस अवसर पर मैं बधाई देना चाहूंगा जिन्होंने बैंकों की श्रेणी में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त किए हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिकाओं के लिए प्राप्त हुए पुरस्कारों के लिए मैं पुनः विशेष रूप से ‘प्रयास’ पत्रिका हेतु भारतीय स्टेट बैंक और ‘वाणी’ पत्रिका हेतु इंडियन ओवरसीज बैंक को बधाई देता हूँ।

माननीय प्रधानमंत्री जी की अध्यक्षता में 6 सितम्बर, 2018 को आयोजित केन्द्रीय हिंदी समिति की बैठक में अन्य निर्णयों के साथ – साथ यह भी निर्णय लिया गया है कि हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए आधुनिक तकनीक का सहारा लिया जाना चाहिए और सरकारी हिंदी और सामाजिक हिंदी के अंतर को कम किया जाए। उपर्युक्त निर्णय के संबंध में हमे सरकारी काम-काज में आम बोल-चाल की भाषा का ही प्रयोग करना चाहिए। इसके साथ ही हमें विविध तकनीकों का प्रयोग करके हिंदी के उपयोग को निरन्तर जन सुलभ बनाने का भी प्रयास करना है।

विभाग को राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए वर्ष 2017-18 का प्रथम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ है। हम सब अपना कार्य इसी प्रकार हिंदी में करते रहें ताकि राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के क्षेत्र में हमारा यह स्तर बना रहे।

“मंतव्य” के तीसरे अंक के प्रकाशन के लिए मैं इससे जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को बधाई देता हूँ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(ललित कुमार)

“मंतव्य”

गृह पत्रिका
अंक: 3, वर्ष : 2018
वित्तीय सेवाएँ विभाग

सरंक्षक

श्री राजीव कुमार
सचिव

सलाहकार एवं मार्गदर्शक

श्री ललित कुमार
(आर्थिक सलाहकार)

सम्पादक

श्री शैलेश कुमार सिंह
संयुक्त निदेशक (रा.भा.)

सहयोग

श्री देवेन्द्र पाल
सहायक निदेशक (राजभाषा)

श्री राजीव कुमार
सहायक निदेशक (राजभाषा)

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	आर्थिक सलाहकार का संदेश	2
2.	संपादकीय	4
3.	नराकास की वर्तमान व्यवस्था प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में एक कहानी है	5
4.	कविता - शहीदों का शौर्य और बलिदान बहन हो तुम	6
5.	11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन की रिपोर्ट	7
6.	राजभाषा हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी	8-10
7.	हिन्दी गतिविधियों के छायाचित्र	11
8.	कविता - माँ मैं भी पढ़ने जाऊँगी	12
9.	हिन्दी माह -2018 में आयोजित प्रतियोगिताओं का परिणाम	13
10.	कविता - बेटियाँ सब समझती है आध्यात्म	14
11.	विभाग के नियंत्रणाधीन कार्यालयों का संसदीय राजभाषायी निरीक्षण सूची	15
12.	हिन्दी अनुभाग द्वारा विभाग के नियंत्रणाधीन कार्यालयों का राजभाषायी निरीक्षण सूची	16
13.	उसकी कहानी कविता - " फिर अंधेरी रात "	17 -18
14.	हिन्दी अनुभाग द्वारा जारी कुछ महत्वपूर्ण परिपत्र	19

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से सम्पादक मण्डल का
एकमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र:



भारत सरकार
वित्त मंत्रालय

वित्तीय सेवाएँ विभाग, हिन्दी अनुभाग
द्वितीय तल, जीवन दीप बिल्डिंग,
संसद मार्ग, नई दिल्ली-110001
फोन: 011-23748744
ई-मेल:-ol@nic.in

‘मंतव्य’ ई-पत्रिका की डिजाइन
एवं सजावट संबंधी समस्त कार्य
दि न्यू इण्डिया एश्योरेंस कंपनी
लिमिटेड के सहायक प्रबन्धक
श्री असीम प्रकाश नंदी एवं
राजभाषा अधिकारी श्री
घनश्याम मीणा द्वारा किया गया
है।



(मुख्यपृष्ठ)

केवल नि: शुल्क वितरण हेतु प्रकाशित

संपादकीय



वित्तीय सेवाएं विभाग के कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को एक नई दिशा देने की दृष्टि से संयुक्त सचिव (एमकेएम) की पहल से ई-पत्रिका “मंतव्य” का प्रकाशन शुरू किया गया था जिसके अब तक दो अंक प्रकाशित किए जा चुके हैं। अब इस पत्रिका का तीसरा अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। इसीलिए इसमें विभाग की अब तक राजभाषा संबंधी गतिविधियों की सम्यक् जानकारी देने का प्रयास किया गया है जिसमें विश्व हिन्दी सम्मेलन की आख्या से लेकर हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं/कार्यक्रमों एवं राजभाषायी निरीक्षणों के साथ-साथ अधिकारियों/कर्मचारियों की पुरस्कृत कविताओं को भी स्थान दिया गया है।

14 सितम्बर, 2018 को आयोजित हिन्दी दिवस समारोह में विभाग को राजभाषा नीति के सर्वोत्तम कार्यान्वयन के लिए वर्ष 2017-18 का प्रथम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्रदान किया जाना हम सबके लिए गौरव का विषय है जिसके लिए सभी अधिकारी/कर्मचारी बधाई के पात्र हैं। इस पुरस्कार के प्राप्त होने से राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति हमारा दायित्व और बढ़ गया है।

कुल मिलाकर आज हिन्दी के व्यवहार के प्रति आम लोगों के नजरिये में काफी बदलाव हुआ है। इसलिए आज हर क्षेत्र में इसकी पहुंच बढ़ी है: (क) समाचार पत्र, पत्रिकाओं और साहित्य में हिन्दी; (ख) रेडियो, टी. वी. और सिनेमा में हिन्दी; (ग) विज्ञापन एवं सूचना तंत्र में हिन्दी; और (घ) बाजार एवं प्रशासन में हिन्दी।

प्रशासन को छोड़कर अन्य सभी उपर्युक्त क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोग स्वतः स्फूर्त एवं बहु-आयामी है। आज समय की मांग है कि उपर्युक्त अन्य क्षेत्रों की तरह प्रशासन में भी हिन्दी का प्रयोग सहज रूप में हों। इसके लिए राजभाषा अधिनियम एवं इसके अधीन बनाए गए नियमों में सुस्पष्ट निर्देश है कि जो पत्र, परिपत्र आदि हिन्दी में या हिन्दी और अंग्रेजी में जारी होने चाहिए या जो प्रलेख हिन्दी तथा अंग्रेजी, दोनों भाषाओं में तैयार किए गए हों, ये उसी रूप में जारी होते हैं, यह देखने की जिम्मेदारी पत्र या उस प्रलेख पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी की है। अतः हस्ताक्षर से पूर्व ऐसे अधिकारी को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि ऐसे पत्र/परिपत्र/अभिलेख आदि हिन्दी में या द्विभाषी रूप में जारी किए गए हैं।

मुझे आशा है कि विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी इसी प्रकार राजभाषा हिन्दी की संवृद्धि के लिए प्रयासरत रहेंगे एवं ई-पत्रिका को अधिकाधिक रोचक एवं उपयोगी बनाने के लिए अपना योगदान निरन्तर देते रहेंगे।

(शैलेश कुमार सिंह)

संयुक्त निदेशक (रा.भा.)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों (नराकास) की वर्तमान व्यवस्था



- ❖ “नराकास” का गठन: राजभाषा विभाग के दिनांक 22.11.1976 के का.ज्ञा.सं. 1/14011/12/76-रा.भा.(का-1) के अनुसार देश के उन सभी नगरों में जहां केंद्रीय सरकार के 10 या इससे अधिक कार्यालय हों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा सकता है। समिति का गठन राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों से प्राप्त प्रस्तावों के आधार पर भारत सरकार के सचिव(राजभाषा) की अनुमति से किया जाता है।
- ❖ अध्यक्षता: इन समितियों की अध्यक्षता नगर विशेष में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि के वरिष्ठतम अधिकारियों में से किसी एक के द्वारा की जाती है। अध्यक्ष को राजभाषा विभाग द्वारा नामित किया जाता है। नामित किए जाने से पूर्व प्रस्तावित अध्यक्ष से समिति की अध्यक्षता के संबंध में लिखित सहमति प्राप्त की जाती है।
- ❖ सदस्यता: नगर में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालय/उपक्रम/बैंक आदि अनिवार्य रूप से इस समिति के सदस्य होते हैं। उनके वरिष्ठतम अधिकारियों(प्रशासनिक प्रधानों) से यह अपेक्षा की जाती है कि वे समिति की बैठकों में नियमित रूप से भाग लें।
- ❖ सदस्य- सचिव: समिति के सचिवालय के संचालन के लिए समिति के अध्यक्ष द्वारा अपने कार्यालय से अथवा किसी सदस्य कार्यालय से एक हिंदी विशेषज्ञ को उसकी सहमति से समिति का सदस्य-सचिव मनोनीत किया जाता है। अध्यक्ष की अनुमति से समिति के कार्यकलाप सदस्य-सचिव द्वारा किए जाते हैं।
- ❖ बैठकें: इन समितियों की वर्ष में दो बैठकें आयोजित की जाती हैं। प्रत्येक समिति की बैठकें आयोजित करने के लिए राजभाषा विभाग द्वारा एक कैलेंडर रखा जाता है जिसमें प्रत्येक समिति की बैठक हेतु एक निश्चित महीना निर्धारित किया जाता है। इन बैठकों के आयोजन संबंधी सूचना समिति के गठन के समय दी जाती है और निर्धारित महीनों में समिति को अपनी बैठकें करनी होती हैं।
- ❖ प्रतिनिधित्व: इन समितियों की बैठकों में नगर विशेष में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि के प्रशासनिक प्रधान भाग लेते हैं। राजभाषा विभाग (मुख्यालय) एवं इसके क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय के अधिकारी भी इन बैठकों में राजभाषा विभाग का प्रतिनिधित्व करते हैं। नगर स्थित केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद की शाखाओं में से किसी एक प्रतिनिधि एवं हिंदी शिक्षण योजना के किसी एक अधिकारी को भी बैठक में आमंत्रित किया जाता है।
- ❖ उद्देश्य: केंद्रीय सरकार के देश भर में फैले हुए कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के मार्ग में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक संयुक्त मंच की आवश्यकता महसूस की गई ताकि वे मिल बैठकर सभी कार्यालय/उपक्रम/बैंक आदि चर्चा कर सकें। फलतः नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के गठन का निर्णय लिया गया। इन समितियों के गठन का प्रमुख उद्देश्य केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा करना, इसे बढ़ावा देना और इसके मार्ग में आई कठिनाइयों को दूर करना है।

देवेन्द्र पाल
सहायक निदेशक (रा. भा.)

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में एक कहानी है



एक बार एक 26 साल का लड़का और उसका पिता रेलगाड़ी में सफ़र कर रहे थे। वह लड़का बार-बार ट्रेन की खिड़की से झाँक रहा था और बाहर देखते हुए पेड़ पौधों को देखकर जोर-जोर से चिल्ला रहा था और हंस रहा था।

पास ही में एक शादी-शुदा जोड़ा बैठे थे वह सब देखकर हंस रहे थे।

तभी उस 26 साल के लड़के के पिता ने अपने बेटे से कहा ! देखो बेटा.... बाहर असमान में बादलों को देखो वह भी हमारे साथ दौड़ लगा रहे हैं। यह पागलपना देखकर उस शादी-शुदा जोड़े को सहन नहीं हुआ और वह उस लड़के के पिता से बोल बैठे ! आप अपने बेटे को किसी डॉक्टर को क्यों नहीं दिखाते ?

यह सुनकर उस लड़के के पिता ने उत्तर दिया ! हाँ , हम डॉक्टर के पास से ही आ रहे हैं। दरसल मेरा बेटा जन्म के समय से ही देख नहीं सकता था पर आज उसके आँखों के सफल ऑपरेशन के कारण वह देख पा रहा है और आज वह बहुत खुश है।

विभागीय प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त स्वरचित कविता
शहीदों का शौर्य और बलिदान

नमन करता हूँ मैं तुझको और तेरी जवानी को
झेली थी गोली सीने पर धरा उस आसमानी को।

धन्य है वो पिता जिसने लहू देकर तुझे सींचा
धन्य है
है शत-शत बार अभिनन्दन तेरी उस माता रानी को।
नमन करता हूँ

पिया वो चूड़ियों में जिसकी खन-खन की आवाजें थी
जो दे आयी सिन्दूर अपना नमन उस राधा रानी को।
नमन करता हूँ

वो पावन देहरी जिस पर लिया था जनम तूने
वो पावन देहरी
नमन उस शौर्य की जीवित निराली राजधानी को
नमन करता हूँ

बहन जो उलझनों के डर से राखी खोल लायी थी
बहन जो
सहेजा लाख वर्षों तक उस अनुपम निशानी को
नमन करता हूँ

गिनकर दन्त सिंहों के जो गिन्ती तूने सीखी थी
गिनकर दन्त
यूँ तोड़े लाख सिकन्दर कर दिए पानी-पानी को ।
नमन करता हूँ

कटकर इन्च में भी मुख से तेरे आह न निकली
कटकर इन्च
नमन करता हूँ मैं तुझको और तेरी जवानी को
झेली थी गोली सीने पर धरा उस आसमानी को ।

अमित गोस्वामी
सहायक अनुभाग अधिकारी

भाषा प्रेम, स्वदेश प्रेम और स्वावलंबन आदि ऐसे गुण हैं जो प्रत्येक मनुष्य में होने चाहिए ।

- रामजी लाल शर्मा

हमारी भारत भारती की शैशवावस्था का रूप ब्राह्मी या देववाणी है, उसकी किशोरावस्था वैदिक भाषा और संस्कृति उसकी यौवनावस्था की सुंदर मनोहर छटा है ।

- बदरीनारायण चौधरी प्रेमधन



बहन हो तुम

बहन हो तुम .

हर भाई का अरमान हो तुम
राखी के धागे में लिपटी
एक मनभावन पहचान हो तुम,
माँ के जैसा है मान तेरा
घर-घर पाती सम्मान हो तुम.

स्वार्थ भरी इस दुनिया में
एक सुखद अहसास हो तुम.
घायल हाथों की पट्टी हो,
आहत मन का बाम हो तुम.
स्नेह का जलता दीपक हो,
ममता का बिम्ब महान हो तुम.
संचारी है रूप तुम्हारा,
सर्वोत्तम जीवन आयाम हो तुम.

तुमसे सूरज-चाँद हमारे,
झीलमिल, झीलमिल करते तारे,
हरा-भरा जीवन है तुमसे,
सच्चे सुख का संसार हो तुम.
इतना सुन्दर, इतना कोमल
है तेरे धागों का बंधन
मृग बन दूँद रहे जो खुशबू,
उसका भी स्रोत साकार हो तुम.

जब-जब माथे तिलक लगाती
राखी बांध जब तुम मुस्काती,
खुशियों की एक धार निकलती,
लगता सृष्टि साकार हो तुम.

खत में सिमटी तेरी बातें,
भीगे सावन की सौगातें
धागों में बंध बढ़ता जीवन
फूलों भरी बहार हो तुम

धरती हो तुम, आसमान हो तुम,
चमत्कारी वरदान हो तुम
रिशतों का केंद्र हो,
बहन हो तुम.

राजीव कुमार
सहायक निदेशक

18 से 20 अगस्त, 2018 के दौरान मॉरीशस में गोस्वामी तुलसीदास नगर के अभिमन्यु अनंत सभागार में आयोजित किए गए 11वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में वित्तीय सेवाएं विभाग की ओर से सुश्री अंजना दुबे, उप महानिदेशक, श्री शैलेश कुमार सिंह, संयुक्त निदेशक(रा.भा.) एवं श्री देवेन्द्र पाल, सहायक निदेशक(रा.भा.) ने प्रतिनिधित्व किया था।

सम्मेलन से पूर्व 17 अगस्त, 2018 शुक्रवार को मॉरीशस के मशहूर गंगा तालाब पर माननीय केन्द्रीय विदेश राज्य मंत्री श्री वी०के० सिंह, श्री एम०जे० अकबर, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्री केशरी नाथ त्रिपाठी, गोवा की राज्यपाल श्रीमती मृदला सिन्हा एवं माननीय सांसदों के साथ भारत सरकार एवं मॉरीशस सरकार के वरिष्ठतम अधिकारियों तथा भारत एवं मॉरीशस के हिंदी प्रेमियों की उपस्थिति में गंगा आरती एवं प्रार्थना सभा हुई।

विश्व हिन्दी सम्मेलन की धूम समूचे मारीशस में देखी गई जहां जगह-जगह हिन्दी के होर्डिंस एवं बैनर देखे गए। स्थानीय टीवी एवं रेडियो पर हिन्दी सम्मेलन की चर्चा देखी व सुनी गई। इस सम्मेलन की शुरुआत मॉरीशस के राष्ट्रीय गान से हुई। इसके बाद भारत का राष्ट्रीय गान हुआ। सम्मेलन में इसके लोगो पर एक फिल्म भी दिखाई गई जिसकी प्रस्तावना श्री अशोक चक्रधर द्वारा तैयार की गई थी जिसमें भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर तथा मॉरीशस के राष्ट्रीय पक्षी डोडो की कहानी कही गई है। इसी दिन मॉरीशस पोस्ट द्वारा दो डाक टिकट भी जारी किए गए। इसके साथ-साथ कुछ पत्रिकाओं का भी विमोचन किया गया जिनमें गगनांचल, दुर्गा, राजभाषा भारती, डायसपोरा, प्रिया, भोपाल से मॉरीशस तक स्मारिका प्रमुख हैं। धन्यवाद ज्ञापन माननीय केन्द्रीय विदेश राज्य मंत्री श्री वी०के० सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर माननीय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज, मॉरीशस के प्रधान मंत्री माननीय प्रवीण कुमार जगन्नाथ एवं भारत की ओर से कई मंत्रीगण उपस्थित थे।

माननीय विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह सम्मेलन हिन्दी के विकास और संरक्षण पर केन्द्रित है। आज हिन्दी पढ़ने, बोलने और भाषा की शुद्धता को कायम रखने की जरूरत है। पहले यह सम्मेलन साहित्य और साहित्यकारों पर केन्द्रित होता था लेकिन उन्होंने महसूस किया कि यदि भाषा बचाई नहीं गई तो साहित्य को कौन पढ़ेगा। उन्होंने कहा कि अलग-अलग देशों में हिन्दी को बचाने की जिम्मेदारी भारत ने ली है। इस सम्मेलन का उद्देश्य हिन्दी भाषा को ग्लोबल कम्यूनिकेशन का जरिया बनाना और इसमें जरूरी बदलाव करने की पीढ़ी को इस भाषा से जोड़ना है। जब योग दिवस के लिए भारत 177 देशों का समर्थन हासिल कर सकता है तब संयुक्त राष्ट्र की भाषा के लिए 129 देशों का समर्थन भी हासिल किया जा सकता है। इसी अनुक्रम में संयुक्त राष्ट्र संघ के रेडियो द्वारा प्रत्येक शुक्रवार को प्रसारित होने वाले विश्व हिंदी समाचार को अधिक से अधिक लोगों द्वारा सुना जाए और उनके द्वारा इसके ट्वीटर पर इसकी पुष्टि की जाए ताकि इस समाचार को दैनिक किए जाने की राह आसान हो। इससे हिंदी के प्रति विश्व स्तर पर बढ़ते लगाव को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा इसे मान्यता दिलवाने के प्रयास को बल मिलेगा।

मॉरीशस के प्रधान मंत्री माननीय प्रवीण कुमार जगन्नाथ के मुताबिक मारीशस के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास में हिंदी की महती भूमिका है। यदि भारत माता है तो मारीशस उस माता का पुत्र है। पुत्र मारीशस अपना कर्तव्य अच्छी तरह समझता है और वह हिंदी के विकास में तथा उसको मजबूत करने के लिए वह जी जान से समर्थन देगा। उन्होंने यह भी कहा कि पूरे संसार में लगभग 50 करोड़ से ज्यादा हिन्दी भाषियों की संख्या को देखते हुए हम यह विश्वास के साथ कह सकते हैं कि हिन्दी के लिए वह दिन दूर नहीं जब संयुक्त राष्ट्र संघ में उसे आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता मिलेगी।

भारत के पूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के निधन पर सम्मेलन के पहले सत्र से पूर्व एक विशेष सत्र आयोजित किया गया जिसमें वहां उपस्थित सभी गणमान्य सदस्यों ने उन्हें भाव-भीनी श्रद्धांजलि दी। विवेकानंद सेंटर में आयोजित सम्मेलन में चारों ओर उनकी बड़ी-बड़ी तस्वीर लगाई गई थीं। प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिन्दी सहित भारतीय भाषाओं का विकास पर आयोजित कार्यक्रम के तहत कंठस्थ अनुवाद सॉफ्टवेयर का माननीय गृह राज्य मंत्री श्री किरण रिजजू द्वारा लोकार्पण किया गया जिसे राजभाषा विभाग द्वारा सीडैक पूणे के सहयोग से तैयार किया गया है।

19 अगस्त, 2018 दिन रविवार को हिन्दी भाषा एवं इसकी संस्कृति से जुड़े विषयों पर चर्चा हुई। विशेषज्ञों ने कहा कि ब्रांड और बाजार में हिन्दी की बढ़ती मान्यता के संकेत मिलते हैं। सभी सत्रों का मुख्य केन्द्र यह था कि किस तरह हिंदी भाषा को आमजनों के साथ जोड़ा जाए। इस दिन चार सत्र हुए जिसमें देश-विदेश से आए सहभागियों ने अपने विचार रखे। इस दौरान फिल्मों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का संरक्षण, संचार माध्यम और भारतीय संस्कृति, प्रवासी संसार-भाषा और संस्कृति तथा हिन्दी बाल साहित्य पर प्रकाश डाला गया।

20 अगस्त, 2018 के सत्र के दौरान हिन्दी को आगे बढ़ाने के साथ-साथ दुनिया में इसे उचित अधिकार और पहचान दिलाने के लिए भी वादे किए गए जिन्हें अगले तीन वर्षों में पूरा करने पर जोर दिया गया। इस दिन विभिन्न सत्रों में की गई अनुशंसाओं पर संक्षिप्त टिप्पणियां भी प्रस्तुत की गईं। इसके अनुशंसाओं में पाठ्यक्रम में लोक संस्कृति को शामिल करना और लोकभाषा के लिए कार्य योजना बनाना, प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी साहित्य भारतीय भाषाओं के विकास हेतु डिजिटल क्रांति लाना, हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाना, हिंदी शिक्षण में भारतीय संस्कृति को लेकर शिक्षकों के प्रशिक्षण पर जोर देना, साहित्य और संस्कृति को मजबूत करना तथा अगला विश्व हिंदी सम्मेलन फीजी में करवाने की सिफारिश की गई।

अंत में विश्व की विभिन्न विभूतियों को सम्मानित किया गया। इसी के साथ 11वें विश्व हिन्दी सम्मेलन का समापन हुआ। मारीशस के पूर्व प्रधान मंत्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ ने कहा कि हिन्दी यून में मान्यता दिलाने के लिए मारीशस का पूर्ण समर्थन है और कार्यक्रम का अंत जय मॉरीशस, जय भारत, जय हिन्दी से किया गया। पूरा सम्मेलन माननीय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज की देख-रेख में संपन्न हुआ। इस सम्मेलन का महत्व इस दृष्टि से भी रहा कि जहां 10 वें विश्व हिंदी सम्मेलन भोपाल में 39 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था, वहीं इस सम्मेलन में 45 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अतः विश्व हिंदी सम्मेलनों के आयोजनों से विश्व में हिन्दी के प्रगति को गति मिलेगी और हिन्दी की विचार-धारा में भी प्रगति होने की और संभावना बढ़ेगी।

इस अवसर पर मॉरीशस स्थित कार्यालयों- भारतीय जीवन बीमा निगम, बैंक ऑफ बड़ौदा, भारतीय स्टेट बैंक एवं न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड के प्रतिनिधियों के साथ-साथ वित्तीय सेवाएं विभाग के नियंत्रणाधीन भारत स्थित विभिन्न कार्यालयों यथा भारतीय स्टेट बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, भारतीय आयात-निर्यात बैंक, विजया बैंक, इंडियन बैंक, केनरा बैंक, इरडाई और दि ओरिएंटल इश्योरेंस कंपनी लिमिटेड के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। इस परिवेश में अनौपचारिक वार्ता के दौरान यह अपेक्षा व्यक्त की गई कि इस प्रकार के सम्मेलनों में नियंत्रणाधीन कार्यालयों का प्रतिनिधित्व सराहनीय है, क्योंकि इससे राजभाषा के रूप में ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर हिंदी को जानने, समझने और इसमें मौलिक रूप से काम करने की अभिप्रेरणा मिलती है।

आज का युग सूचना , संचार व विचार का युग है। सूचना प्रौद्योगिकी एक सरल तंत्र है जो तकनीकी प्रयोग के सहारे सूचनाओं का संकलन , प्रक्रिया व संप्रेषण करता है। सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में कंप्यूटर का महत्व कल्पवृक्ष से कम नहीं है जिससे व्यवसायिक , वाणिज्यिक , जन संचार , शिक्षा , चिकित्सा , आदि कई क्षेत्र लाभान्वित हुये हैं। कंप्यूटर व सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जो विकास हुआ है वह भाषा के क्षेत्र में भी मौन क्रांति का वाहक बन कर आया है। अभी तक भाषा जो केवल मनुष्यों के आवश्यकताओं को पूरा कर रही थी , उसे सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में मशीन व कंप्यूटर की नित नई भाषायी मांगों को पूरा करना पड़ रहा है।

चूँकि वर्तमान समय सूचना प्रौद्योगिकी का युग है , सभी कार्यालयों में तमाम काम कंप्यूटरों पर ही किये जाते हैं। रोजमर्रा की जिन्दगी मानो सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित है। मोबाइल फोन , एटीएम , इंटरनेट बैंकिंग से लेकर रेलवे आरक्षण , ऑनलाइन शॉपिंग , आदि तक सूचना प्रौद्योगिकी हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुकी है। संविधान के अनुच्छेद 343 के आधार पर हिंदी को भारत में राजभाषा का दर्जा प्राप्त है जिसकी वजह से हिंदी भाषा का प्रयुक्ति क्षेत्र बहुत विस्तृत है , सभी सरकारी कार्यालयों में हिंदी को कार्यालयीन भाषा का दर्जा प्राप्त है व इसका कार्यक्षेत्र केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों , कार्यालयों , निगमों , विभागों व उपक्रमों आदि तक फैला हुआ है। समकालीन समय में सूचना प्रौद्योगिकी जिसकी आत्मा कंप्यूटर है , किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी बना हुआ है। यह सर्वज्ञात है कि कंप्यूटर में राजभाषा हिंदी में कार्य करना सुगम बनाया है। हिंदी में कंप्यूटर स्थानीयकरण का कार्य काफी पहले प्रारंभ हुआ और अब यह आंदोलन की शक्त ले चुका है। हिंदी सॉफ्टवेयर लोकलाइजेशन का कार्य सर्वप्रथम सी- डैक द्वारा 90 के दशक में किया गया था। वर्तमान में हिंदी भाषा के लिये कई संगठन कार्य करते हैं , जिसमें सी-डैक , गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग केंद्रीय हिंदी संस्थान और अनेकों गैर सरकारी संगठन जैसे सराय , इंडलक्स , आदि प्रमुख हैं।

एक ओर यूनिकोड के प्रयोग ने हिंदी के प्रयोग को आगे बढ़ाने के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है वहीं आज सिस्टम जेनेरेट प्रोग्रामों में हिंदी की स्थिति कुछ खास नहीं है। अधिकतर सॉफ्टवेयर प्रोग्राम पहले ही तैयार कर लिये जाते हैं , उसके बाद उनमें हिंदी की सुविधा तलाश की जाती है। इसके बावजूद भी यह संतोष का विषय है कि 21 वीं सदी में भाषा के प्रचार-प्रसार में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिक अहम हो गयी है व भाषाओं के मानकीकरण का कार्य आसान हो गया है।

हिंदी यूनिकोड के अस्तित्व में आने के बाद अब हर कंप्यूटर , लैपटॉप यहाँ तक की स्मार्ट फोन पर भी हिंदी में काम करना व करवाना कोई बड़ा मुद्दा नहीं रह गया है। यूनिकोड एक अंतर्राष्ट्रीय मानक कोड है जिसमें हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं सहित विश्व की लगभग 200 भाषाओं के लिये कोड निर्धारित किये गये हैं। चूँकि कंप्यूटर मूल रूप से किसी भाषा से नहीं बल्कि अंकों से संबंध रखता है इसलिए हम किसी भी भाषा को एनकोडिंग व्यवस्था के तहत मानक रूप प्रदान कर सकते हैं। साथ ही इसी आधार पर उनके लिये फॉण्ट भी निर्मित किये जा सकते हैं , जैसे अंग्रेजी भाषा अथवा रोमन लिपि के लिये एरियल फॉण्ट की एनकोडिंग की गयी है , उसी तरह हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के लिये निर्मित आधुनिक यूनिकोड फॉण्ट्स की भी एनकोडिंग की गयी है जिसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एप्पल , आइबीएम , माइक्रोसॉफ्ट , सैप , साइबेस , यूनिसिस जैसी सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग की प्रमुख कंपनियों ने अपनाया है। मानकीकरण का यह कार्य अमेरिका स्थित यूनिकोड कंसोर्शियम द्वारा किया जाता है जो कि लाभ ना कमाने वाली एक संस्था है। भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक विभाग ने भी इस कंसोर्शियम के जरिये हिंदी के यूनिकोड फॉण्ट जैसे मंगल , कोकिला , एरियल यूनिकोड एमएस , आदि की एनकोडिंग करायी है जिसकी वजह से आधुनिक कंप्यूटरों में यह फॉण्ट पहले से ही विद्यमान होते हैं। यूनिकोड 16 बिट की एक एनकोडिंग व्यवस्था है जो कि पालि और प्राकृत जैसी प्राचीन भाषाओं से भी परिचित है। इसकी विशेषता यह है कि एक कम्प्यूटर पर के पाठ को दुनिया के किसी भी अन्य यूनिकोड आधारित कम्प्यूटर पर खोला व पढ़ा जा सकता है। इसके लिए अलग से उस भाषा के फॉण्ट का प्रयोग करने की अनिवार्यता नहीं होती; क्योंकि यूनिकोड केन्द्रित हर फॉण्ट में सिद्धांततः विश्व की हर भाषा के अक्षर मौजूद होते हैं। यूनिकोड आधारित कम्प्यूटरों में प्रत्येक कार्य भारत की किसी भी भाषा में किया जा सकता है , बशर्ते कि 'ऑपरेटिंग सिस्टम' पर इन्स्टॉल सॉफ्टवेयर यूनिकोड व्यवस्था आधारित हो। आज बाजार में आने वाला हर नया कंप्यूटर व अन्य गैजट ना सिर्फ हिंदी , बल्कि दुनिया की आधिकतर भाषाओं में कार्य करने में सक्षम है क्योंकि यह सभी लिपियाँ यूनिकोड मानक में शामिल हैं।

मौजूदा समय में हिंदी 'ग्लोबल हिंदी' में परिवर्तित हो गयी है , आज तकनीकी विकास के युग में दूसरे देशों के लोग भी , भले की विपणन के लिए ही सही , हिंदी भाषा सीख रहे हैं। आज स्थिति यह है कि भारत व चीन के व्यवसायिक संबंधों को बढ़ाने की संभावनाओं के तलाश के लिये लगभग दस हजार लोग पेरिचिंग में हिंदी सीख रहे हैं। आज से लगभग 45 वर्ष पूर्व कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य आरंभ हुआ और इसी तरह एनकोडिंग व डिकोडिंग के माध्यम से विश्व की विभिन्न भाषाएँ भी कंप्यूटर पर सुलभ होने लगी , इस तकनीकी विकास ने भारतीय भाषाओं को जोड़ा है , कंप्यूटर के माध्यम से विभिन्न सॉफ्टवेयरों, सी-डैक संस्था के हिंदी सीखने सीखाने के विभिन्न कंप्यूटरीकृत कार्यक्रमों जैसे- प्रबोध , प्रवीण व प्राज्ञ पाठ्यक्रमों के लिये लीला वाचिक तकनीक के प्रयोग ने भाषा सीखने की प्रक्रिया को विभिन्न भाषा माध्यमों से बिल्कुल आसान बना दिया जिससे भाषायी निकटता का उदय हुआ , जिसके वजह से भाषायी एकता आना स्वाभाविक था।

वर्तमान समय में मोबाइल फोन ने लैंडलाइन फोन का स्थान ले लिया है। मोबाइल फोन पर हिंदी समर्थन हेतु निरंतर कार्य चल रहा है। कई मोबाइल कंपनियाँ , सोनी , नोकिया , सैमसंग आदि हिंदी टंकण , हिंदी वाइस सर्च व हिंदी भाषा में इंटरफेस की सुविधा प्रदान कर रही है। इसके साथ ही आज आइ पैड पर हिंदी लिखने की सुविधा उपलब्ध है। अंग्रेजी के साथ-साथ आज हिंदी भाषा का भी नेटवर्क पूरे विश्व में फैलता जा रहा है। जागरण , वेब दुनिया , नवभारत टाइम्स , विकिपिडिया हिंदी , भारत कोष , कविता कोष , गद्य कोष , हिंदी नेक्स्ट डॉट कॉम , हिंदी समय डॉट कॉम , आदि इंटरनेट साइटों पर हिंदी सामग्री देखी जा सकती है।

आज विज्ञापन से संबंधित एसएमएस से खाता-शेष तक हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में प्राप्त किया जा सकता है। भारत सरकार के गृह मंत्रालय के तहत कार्यरत सी-डैक (पुणे) बाईस भाषाओं में अपनी विभिन्न तकनीकी आयामों से वेबसाइटों, सॉफ्टवेयरों, रिपोर्टों, महाराष्ट्र सरकार की मराठी भाषा में तथा असम सरकार की असमिया भाषा में वेबसाइट निर्माणों, रिजर्व बैंक के राजभाषा रिपोर्ट जेनरेशन सॉफ्टवेयर (आरआरजीएस) निर्माण आदि के कार्य कर भाषायी एकता के क्रम में योगदान कर रहा है।

हिंदी के बड़े बाजार के नब्ज को देखते हुये माइक्रोसॉफ्ट ने अपने सॉफ्टवेयर उत्पादों से संबंधित सहायक साहित्य तथा मार्गदर्शक सूत्रों को विशेषज्ञों की सहायता से हिंदी में उपलब्ध कराने के प्रयत्न शुरू किया गया है। बहुप्रचलित विंडोज विस्टा व विंडोज 7 जैसे ऑपरेटिंग सिस्टम के साथ एमएस वर्ड, पावर प्वाइंट, एक्सेल, नोटपैड, इंटरनेट एक्सप्लोरर, जैसे प्रमुख सॉफ्टवेयर उत्पाद अब हिंदी में कार्य करने की सुविधा प्रदान करते हैं। माइक्रोसॉफ्ट का लैंग्वेज इंटरफेस पैकेज स्थानीयकरण का बेहतर उदाहरण है।

गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग ने अपनी वेबसाइट <http://www.rajbhasha.nic.in> पर राजभाषा हिंदी में कार्य करने को आसान बनाने के उद्देश्य से हिंदी में कई सॉफ्टवेयर उपलब्ध कराये हैं, जिसमें से निम्नलिखित प्रमुख हैं-

- सर्वप्रथम हम लीला सॉफ्टवेयर की बात करेंगे LILA अर्थात् Learn Indian Languages with Artificial Intelligence, एक स्वयं शिक्षण मल्टीमीडिया पैकेज है। यह राजभाषा विभाग द्वारा तैयार किया गया एक निशुल्क सॉफ्टवेयर है जिसके द्वारा प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ स्तर के हिंदी के पाठ्यक्रमों को विभिन्न भारतीय भाषाओं जैसे कन्नड़, मल्यालम, तमिल, तेलुगु, बांग्ला आदि के माध्यम से सीखने, ऑनलाइन अभ्यास, उच्चारण सुधार, स्वमूल्यांकन, आदि की सुविधा उपलब्ध है।
- मंत्र अर्थात् Machine Assisted Translation Tool सीडैक द्वारा विकसित एक मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर है। यह राजभाषा विभाग द्वारा विकसित एक मशीनी साधित अनुवाद है जो राजभाषा के प्रशासनिक, वित्तीय, कृषि, लघु उद्योग, सूचना प्रद्योगिकी, स्वास्थ्य रक्षा, शिक्षा एवं बैंकिंग क्षेत्रों के दस्तावेजों का अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करते हैं। मंत्र राजभाषा इंटरनेट संस्करण के डिजाइन व विकास थिन क्लाइट आर्किटेक्चर पर आधारित है, इसमें संपूर्ण अनुवाद प्रक्रिया सर्वर पर होती है, इसलिये दूरवर्ती स्थानों में भी इंटरनेट उपलब्ध तो एंड सिस्टम पर भी दस्तावेजों का अनुवाद करने की इस सुविधा का उपयोग किया जा सकता है।
- श्रुतलेखन एक सतत स्पीकर इंडीपेंडेंट हिंदी स्पीच रिकगनिश्र सिस्टम है, जिसका विकास सीडैक, पुणे के एलाइड ए.आई ग्रुप ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से किया गया है। यह स्पीच टू टेक्स्ट टूल है, इस विधि में प्रयोक्ता माइक्रोफोन में बोलता है तथा कंप्यूटर में मौजूद स्पीच टू टेक्स्ट प्रोग्राम उसे प्रोसेस कर पाठ/टेक्स्ट में बदल कर लिखता है।
- वाचांतर ध्वनि से पाठ में अनुवाद प्रणाली है जिसमें दो प्रौद्योगिकों का समावेश है। यह उपकरण अंग्रेजी स्पीच से हिंदी अथ अनुवाद हेतु उपलब्ध कराया जाता है।

सीडैक पुणे के तकनीकी सहयोग से ई-महाशब्दकोश का निर्माण किया गया जो की राजभाषा की साइट पर निशुल्क उपलब्ध है। यह एक द्विभाषी –द्विआयामी उच्चारण शब्दकोश है जिसके द्वारा हिंदी या अंग्रेजी अक्षरों द्वारा शब्द की सीधी खोज किया जा सकता है।

अनुवाद दो भाषाओं के बीच सेतु का कार्य करता है। तकनीकी के उत्तरोत्तर विकास द्वारा मशीनी अनुवाद टूल बनाना संभव हो सका। आज विश्व के कई देशों के पास अत्यंत ही सक्षम अनुवाद टूल हैं। इनकी सहायता से वैश्विक मंचों पर विभिन्न देशों का आपसी मिलन आसानी से संभव हुआ है। भारत में भी अनुवाद टूल बनाने की दिशा में कई सॉफ्टवेयर बनाए गए हैं जिनमें सी-डैक, आईआईटी कानपुर, आईआईटी मुंबई जैसी संस्थाओं की अहम भूमिका है। इसके अलावा हिंदी में शब्द संसाधन के लिये विशेष रूप से तैयार ई-पुस्तक, राजभाषा विभाग की साइट पर उपलब्ध है। भाषायी परस्पर आदान प्रदान के क्रम में भी तकनीकी विकास हुआ है। गूगल ट्रांसलेट के माध्यम से विभिन्न भाषाओं का अनुवाद किया जा सकता है। आज हमारे पास लिपियों को बदलने का सॉफ्टवेयर गिरगिट उपलब्ध है। भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद करने हेतु अनुसारक नाम का सॉफ्टवेयर मौजूद है। हिंदी ऑप्टिकल कैरेक्टर के माध्यम से हिंदी ओसीआर इंपुट करके ओसीआर आउटपुट में 15-16 वर्ष के पहले की सामाग्री को भी परिवर्तित किया जा सकता है। सीडैक के श्रुतलेखन सॉफ्टवेयर से भाषण/स्पीच से पाठ रूप में पहुँचा जा सकता है। गूगल के टूलों में वाचक, प्रवाचक, गूगल टेक्स्ट टू स्पीच के जरिये पाठ से भाषण की सुविधा उपलब्ध है व गूगल के वायस टाइपिंग के जरिये स्पीच को टेक्स्ट में बदलने की सुविधा उपलब्ध है। गूगल वाइस टाइपिंग में हम गूगल डॉक्स के द्वारा हम अपनी आवाज के माध्यम टाइपिंग करने का आनंद उठा सकते हैं।

माइक्रोसॉफ्ट इंडिक लैंग्वेज इनपुट टूल भारतीय भाषाओं हेतु एक सरल टाइपिंग टूल है। वास्तव में यह एक वर्चुअल की बोर्ड है जो कि बिना कॉपी-पेस्ट के झंझट के विंडोज में किसी भी एप्लीकेशन में सीधे हिंदी में लिखने की सुविधा प्रदान करता है। यह सेवा दिसंबर 2009 में प्रारंभ हो गयी थी। यह टूल शब्दकोश आधारित ध्वन्यात्मक लिप्यांतरण विधि का प्रयोग करता है अर्थात् हमारे द्वारा जो रोमन में टाइप किया जाता है, यह उसे अपने शब्दकोश से मिलाकर लिप्यांतरित करता है तथा मिलते-जुलते शब्दों का सुझाव करता है। इस कारण से प्रयोक्ता को लिप्यंतरण स्कीम को याद नहीं रखना पड़ता है जिससे पहली बार एवं शुरुआती हिंदी टाइप करने वालों के लिये काफी सुविधाजनक रहता है।

आज चारों तरफ 'डिजिटल भारत' की बात हो रही है। प्रत्येक ईमान तक इंटरनेट को पहुंचाने की चाहत रखने वाले महज 30 वर्षीय व्यक्ति व सोशल नेटवर्किंग साइट फेसबुक के संस्थापक मार्क जुकरबर्ग के एजेंडे में भी गाँवों को डिजिटल दुनिया से जोड़ना प्रमुखता पा रहा है। हाल में आयोजित 'इंटरनेट ओआरजी समिट'

में उन्होंने कहा, “फेसबुक अपने कंटेंट को क्षेत्रीय भाषाओं में देने पर फोकस कर रहा है।” यह ध्यातव्य है कि एक बिलियन यूजर्स में से फेसबुक के दूसरे सबसे बड़े मार्केट भारत है जहाँ करीब 108 मिलियन एफबी यूजर्स हैं। मार्क जुकरबर्ग ने इस समिट में ‘कनेक्टिंग द अनकनेक्टेड’ अर्थात् ‘वैसे लोगों को इंटरनेट से जोड़ना जो इससे दूर तथा अनभिज्ञ हैं’ जैसा उद्देश्य रखते हुए पूरे समाज के लिए टेक्नोलॉजी की जरूरत बताई। यहाँ भी तकनीकी विकास में भाषायी एकता दिखती है। जब विभिन्न गाँव डिजिटल दुनिया से जुड़ेंगे तो वैश्विक व भारतीय परिक्षेत्र में विभिन्न गाँवों की विभिन्न भाषाएँ भी तकनीकी का हिस्सा होंगी और उनके बीच संप्रेषणीय आदान-प्रदान होगा जिसमें हम भाषायी एकता देख सकेंगे।

भाषायी परिप्रेक्ष्य में तकनीकी विकास की बात प्रिंटिंग प्रेस की बात के बिना अधूरी है। प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार ने सूचना एवं ज्ञान के प्रसार में क्रांति ला दी। वैसे तो विश्व की पहली प्रिंटिंग प्रौद्योगिकी 11वीं सदी में चीन में विकसित हुई परंतु चलित प्रिंटिंग प्रौद्योगिकी 13वीं सदी में ही विकसित हो सकी। उसके बाद जर्मनी के जोहानस गुटेनबर्ग द्वारा विकसित प्रिंटिंग प्रेस ने मुद्रण संसार नयी ऊर्जा दी। पुनर्जागरण काल के इस प्रेस के माध्यम से प्रतिदिन 3600 पृष्ठ तक की छपाई की जा सकती थी जो कि पिछली मशीनों की 2000 पृष्ठ प्रतिदिन की तुलना में काफी अधिक थी। पुनर्जागरण काल में हुए इस अनोखे आविष्कार ने जनसंचार (Mass Communication) की आधारशिला रखी। यूरोप में शिक्षा संपन्न एवं विशिष्ट लोगों की गोद से निकलकर जन सामान्य के बीच पहुंची और शिक्षित जनता की संख्या तीव्र गति से बढ़ी तथा मध्यवर्ग का उदय हुआ। पूरे यूरोप में अपनी संस्कृति के प्रति सजगता और राष्ट्रवाद की भावना के विकास के कारण उस समय के यूरोप की लिंगुआ फ्रैंका (लैटिन) की स्थिति कमजोर हुई तथा स्थानीय भाषाओं की स्थिति मजबूत हुई। प्राचीन और प्रतिष्ठित भाषाओं के साथ-साथ स्थानीय भाषाओं को भी सम्मान मिला। भारत के मुद्रण इतिहास में श्रीरामपुर प्रेस का उल्लेखनीय योगदान है, जिसमें हिंदी अक्षरों को विकसित किया गया तथा मिशनरियों के प्रचार सामग्री के रूप में बाइबिल का हिंदी अनुवाद बड़े स्तर पर छपा गया। स्वाधीनता आंदोलन में विभिन्न भारतीय भाषाओं में समाचार-पत्र निकालने वाले ये प्रेस आंदोलनकारियों के बहुत बड़े हथियार थे जिनकी समाप्ति के लिए ब्रिटिश सरकार ने वर्नाकुलर प्रेस एक्ट जैसे कानून बनाए। ऐसा माना जाता है कि पहले भाषा का प्रयोग, उसके बाद लिपि एवं लेखन का प्रयोग एवं उसके बाद प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार गुणात्मक रूप से दुनिया के तीन सबसे बड़े आविष्कार हैं जिन्होंने ज्ञान एवं विद्या के प्रसार एवं विकास में भारी योगदान किया। इसी कड़ी में चौथा आविष्कार इंटरनेट को माना जाता है।

तकनीकी विकास शब्द जेहन में आते ही हमारा ध्यान इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति की ओर चला जाता है। यही वह दौर था जब मशीनों की वजह से इंसानों के जीवन और जीवन-शैली में व्यापक बदलाव आए। उत्पादन के सभी क्षेत्रों में मशीनों को विकसित किया जाने लगा और हमारी मशीनों पर निर्भरता बढ़ी। औद्योगिक क्रांति से उत्पादित माल के लिए बाजार की जरूरतों ने दुनिया भर के विभिन्न देशों के बीच की दूरियाँ कम कर दी जिसकी वजह से दुनिया भर की भाषाओं के लिए एक नया द्वार खुला। इसी दौरान 19वीं सदी की शुरुआत में कागज बनाने वाली मशीनों का आविष्कार हुआ जो भाषायी दृष्टिकोण से बेहद महत्वपूर्ण थीं। इससे पूर्व लेखन के लिए प्रयुक्त होने वाले कागज का उत्पादन एक दुरूह कार्य था जिसमें वांछित गुणवत्ता प्राप्त करना काफी कठिन होता था। कागज उद्योग विकसित होने से लेखन और पठन का प्रचलन बढ़ा जो कि तमाम भाषाओं और साहित्य को अनंत काल तक लिखित रूप में सहेजने का माध्यम बना।

आधुनिक युग कंप्यूटर का युग है जिसने मनुष्य की कागज पर निर्भरता को काफी हद तक कम कर दिया है। कंप्यूटर के आगमन, प्रसार तथा इसपर हमारी बढ़ती निर्भरता ने कुछ समय तक के लिए भारत जैसी तीसरी दुनिया के देश के लिए स्थानीय भाषाओं के हास का संकट पैदा कर दिया था परंतु नित-नए तरीके से विकसित होते इस यंत्र ने ऐसी बाधाओं को पार कर लिया है और अब यह सभी भारतीय भाषाओं के प्रसार के लिए इलेक्ट्रॉनिक माध्यम उपलब्ध करा रहा है। कंप्यूटर ने टाइपिंग के लिए उपयोग किए जाने वाले टाइपराइटर को चलन से बाहर किया परंतु शुरुआत में यह स्थानीय भाषाओं के लिए सहज नहीं था। इस समस्या का समाधान यूनिकोड के आगमन से हुआ जिसने हिन्दी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं के लिए भी कंप्यूटर पर काम करने के लिए आसान प्लेटफॉर्म निर्मित किया। इसके माध्यम से हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में ब्लॉग लिखे जाने लगे, जो कि अब तक केवल कंप्यूटर के आविष्कारक देशों की भाषाओं में लिखे जा रहे थे। आज हिन्दी में अनेकों ब्लॉग लिखे और पढ़े जा रहे हैं, इतना ही नहीं समाचार पत्रों ने भी अब नियमित रूप से ब्लॉग छापने शुरू कर दिए हैं। यूनिकोड ने स्थानीय भाषाओं में टाइपिंग को आसान बनाकर इन्हें सोशल नेटवर्किंग साइट जैसे- ट्विटर, फेसबुक पर भी स्थापित कर दिया है।

निजी सैटेलाइट टीवी चैनलों के प्रसार ने भाषाई एकता को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनके फ्री टु एयर से डिश कनेक्शन और उसके बाद डाइरेक्ट टु होम तक के तकनीकी विकास ने जनता को उनकी भाषा में मनोरंजन व ज्ञान की पहुंच सुनिश्चित की है। यही बात रेडियो के निजी एफएम चैनलों के प्रसार एवं संचालन के साथ भी लागू होती है। आज भारत में 800 से ज्यादा टीवी चैनल और 250 तक एफएम चैनल उपलब्ध हैं। साथ ही ई समाचार-पत्रों के चलन ने पत्रकारिता को एक नया स्वरूप दिया है। आज अपनी मातृभाषा में समाचार-पत्र पढ़ने के लिए उस क्षेत्र विशेष में अनिवार्यतः उपस्थित रहना आवश्यक नहीं रहा। लगभग सभी प्रमुख समाचार-पत्रों के ई संस्करण इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। इनके अलावा हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में ई-बुक्स, ई-मैगजीन, ई-कॉमिक्स आदि का प्रसार भी काफी तेज गति से हो रहा है।

समेकित रूप से यह कहा जा सकता है कि आज हम तकनीकी युक्त वस्तुओं से चारों ओर से घिरे हुए हैं। तकनीकी विकास ने हमारी जीवन-शैली और समाज के ढांचे को भी प्रभावित किया है और भाषा भी इससे अछूती नहीं है। आज सूचना प्रौद्योगिकी की इस युग में हिन्दी का महत्व पहले से अधिक हो गया है और यह महज राजकाज की संवैधानिक बाध्यता से निकलकर व्यवसायिक भाषा के रूप में उभर कर सामने आयी है।

हिन्दी अनुभाग, वित्तीय सेवाएं विभाग की राजभाषा गतिविधियों के कुछ छायाचित्र



माँ मैं भी पढ़ने जाऊँगी

माँ मैं भी पढ़ने जाऊँगी ।
का,का, कि, की, अ, आ,इ,ई
उंचे स्वर में गाऊँगी
माँ मैं भी पढ़ने जाऊँगी ।
माँ, अब तो मेरी अर्जी सुन लो
इस बिटिया की मर्जी सुन लो
मैं बार-बार दोहराऊँगी
कि हाथ पकड़ कर भैया के संग
माँ मैं भी पढ़ने जाऊँगी ।

कब तक अनपढ़ बैठे बैठे
मैं डंगर-दोर चराऊँगी
क्या बर्तन चोका करतेकरते
मैं अनपढ़ ही रह जाऊँगी
माँ मैं भी पढ़ने जाऊँगी ।

बेटी मां को मनाने के लिए क्या क्या तर्क देती है सुनिए

कपड़े सारे धोकर तेरे
मैं सारे बर्तन माँजूगी
घर के सारे कामों में भी
मैं तेरा हाथ बटाऊँगी
पर हाथ पकड़ कर भैया के संग
माँ मैं भी पढ़ने जाऊँगी ।

अब खेल कूद में जी नहीं लगता
दिन भी मेरा अब नहीं ढलता
मुझ पर यह एहसान करो
मैं जीवन भर गुण गाऊँगी
पर हाथ पकड़ कर भैया के संग
माँ मैं भी पढ़ने जाऊँगी ।

मैं दहेज रूपी दानव पर भी
शिक्षा का अस्त्र चलाऊँगी
माँ दहेज नहीं फिर देना होगा
जो पढ़ लिख कुछ बन जाऊँगी
पर हाथ पकड़ कर भैया के संग
माँ मैं भी पढ़ने जाऊँगी ।
मेरी विनती मेरी अर्जी
अब तो माँ स्वीकार करो
विद्यालय जाने का यह सपना
अब तो माँ साकार करो
अपनी किस्मत मैं खुद ही लिखूँगी
मैं जग में नाम कमाऊँगी
पर हाथ पकड़ कर भैया के संग
माँ मैं भी पढ़ने जाऊँगी ।

बेटी की गुजारिश पर मां कहती है

बेटी, तू तो है बहुत ही भोली
निर्धन की खाली है झोली
भड़या तो वंश चलाएगा
तेरा सिर ढकने आएगा
उससे, तू तुलना मत कर पगली
जा शांत बैठकर धीरज धर
मैं तुझको सब समझाऊँगी
पर हाथ पकड़ कर भड़या के संग
तू न पढ़ने जाएगी

बाबा ने जब यह सुना तो सुनिए की वह क्या बोलते हैं

बाबा ने जब यह सुना
बेटी के सर पर हाथ धरा
बोले बेटी तू है धन्य-धन्य
तेरे संग आशीर्वाद मेरा
अब तू भी पढ़ने जाएगी
अपनी आशा अभिलाषा को
अब तू पूरा कर पाएगी
जा हाथ पकड़ कर भड़या के संग
अब तू भी पढ़ने जाएगी

मां को अपनी गलती का अहसास होता है और वह बोली

तुम मे भड़या में भेद नहीं
ढोंगों ने लिया है जन्म यहीं
पिफर तू क्यों न पढ़ पाएगी
बेटी तू भी पढ़ने जाएगी
तेरे पढ़ने से ही तो अब
धर में शिक्षा आएगी
अने वाली पीढ़ी भी अब
तुमसे संबल पाएगी
हां अब हाथ पकड़ भड़या के संग
तू भी पढ़ने जाएगी

बेटी को जब लगता है कि वह भी पढ़ने जा सकती है तो खुश होकर कहती है

माँ मैंने भी एक सपना देखा है
वह पूरा करना चाहूँगी
जब माँ थककर बेटी होगी
मैं डाक्टर बनकर आऊँगी
सुनकर बेटी का यह सपना
धर में खुशियों की लहर उठी
बाबा भी सहमत बेटी से
ये देख माँ मंद मुस्काई
सब भेदभाव अज्ञान छोड़
अब होने लगी पढ़ाई
बेटी भी अब बेटे के संग करने चली पढ़ाई

सुमन शर्मा
अनुभाग अधिकारी

हिन्दी माह, 2018 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागी

वित्तीय सेवाएं विभाग में 1 सितम्बर से 28 सितम्बर, 2018 तक मनाए गए हिंदी माह के दौरान दिनांक 17.09.2018 से 20.09.2018 तक सामान्य हिंदी प्रतियोगिता (बहु-कार्य कर्मचारियों के लिए), हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण-आलेखन प्रतियोगिता एवं हिंदी टंकण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में निम्नलिखित प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया:

सामान्य हिंदी प्रतियोगिता (बहु-कार्य कर्मचारियों (एमटीएस) के लिए):-

1	श्री नीरज कुमार राजौर	बहु कार्य कर्मचारी	प्रथम पुरस्कार
2	श्री शशिकान्त कुमार	बहु कार्य कर्मचारी	द्वितीय पुरस्कार
3	श्री सुनिल कुमार	बहु कार्य कर्मचारी	तृतीय पुरस्कार
4	श्री राजेश कुमार वर्मा	बहु कार्य कर्मचारी	सांत्वना (1)
5	श्री नरेन्द्र कुमार	बहु कार्य कर्मचारी	सांत्वना (2)
6	श्री दीपक	बहु कार्य कर्मचारी	सांत्वना (3)

हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता

1	श्री अमित गोस्वामी	सहायक अनुभाग अधिकारी	प्रथम पुरस्कार
2	श्रीमती सुमन शर्मा	अनुभाग अधिकारी	द्वितीय पुरस्कार
3	श्री रमन कुमार	सहायक अनुभाग अधिकारी	तृतीय पुरस्कार
4	श्री संदीप कुमार	सहायक अनुभाग अधिकारी	सांत्वना (1)
5	श्री धीरेन्द्र पंत	बहु कार्य कर्मचारी	सांत्वना (2)
6	श्री रतिन्द्र कुमार	सहायक अनुभाग अधिकारी	सांत्वना (3)

हिंदी टिप्पण – आलेखन प्रतियोगिता

1	श्री रमन कुमार	सहायक अनुभाग अधिकारी	प्रथम पुरस्कार
2	श्रीमती सुमन शर्मा	अनुभाग अधिकारी	द्वितीय पुरस्कार
3	श्री अमित गोस्वामी	सहायक अनुभाग अधिकारी	तृतीय पुरस्कार
4	श्री हेमंत कुमार	सहायक अनुभाग अधिकारी	सांत्वना (1)
5	श्री संदीप कुमार	सहायक अनुभाग अधिकारी	सांत्वना (2)
6	श्री विनय कुमार	सहायक अनुभाग अधिकारी	सांत्वना (3)

हिंदी टंकण प्रतियोगिता

1	श्री विनय कुमार	सहायक अनुभाग अधिकारी	प्रथम पुरस्कार
2	श्री रमन कुमार	सहायक अनुभाग अधिकारी	द्वितीय पुरस्कार
3	श्री हेमंत कुमार	सहायक अनुभाग अधिकारी	तृतीय पुरस्कार
4	श्रीमती सुमन शर्मा	अनुभाग अधिकारी	सांत्वना (1)
5	श्री संदीप कुमार	सहायक अनुभाग अधिकारी	सांत्वना (2)
6	श्री सचिन तहलान	सहायक अनुभाग अधिकारी	सांत्वना (3)

विभागीय प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त कविता बेटियां सब समझती है

क्या लिखूँ की वो परियो का रूप होती है
या कड़कती ठण्ड में सुहानी धूप होती है
वो होती है चिड़िया की चहचाहट की तरह
या फिर निचल खिलखिलाहट

क्या लिखूँ की वो परियो का रूप होती है
या कड़कती ठण्ड में सुहानी धूप होती है
वो होती है उदासी में हर मर्ज की दवा की तरह
या उमस में शीतल हवा की तरह

वो आँगन में फैला उजाला है
या मेरे गुस्से पे लगा ताला है
वो पहाड़ की चोटी पर सूरज की किरण है
वो जिंदगी सही जीने का आचरण है
है वो ताकत जो छोटे से घर को महल कर दे
वो काफ़िया जो किसी ग़ज़ल को मुकम्मल कर दे

क्या लिखूँ की वो परियो का रूप होती है
या कड़कती ठण्ड में सुहानी धूप होती है
वो होती है चिड़िया की चहचाहट की तरह
या फिर निचल खिलखिलाहट
वो अक्शर जो न हो तो वर्णमाला अधूरी है
वो जो सबसे जयादा जरूरी है
ये नहीं कहूँगा कि वो हर वक़्त सांस सांस होती है
क्यूँकि बेटिया तो सिर्फ़ अहसास होती है

उसकी आँखें न मुझसे गुड़िया मांगती है ना खिलौना
कब आओगे बस एक छोटा सा सवाल सलोना
जल्दी आऊंगा अपनी मजबूरी को छिपाते हुए मैं देता हूँ जबाब
तारीख़ बताओ टाइम बताओ ,

वो उंगलियो पर करने लगती है हिसाब
और जब मैं नहीं दे पता सही सही जबाब,
अपने आंसुओ को छुपाने के लिए वो अपने चहरे पर रख लेती है किताब
वो मुझसे मनाली में छुटिया ,

मर्सडीस की ड्राइव ,फाइव स्टार में खाने
नए नए आईफ़ोन्स नहीं मांगती ,
ना कि वो बहुत सरे पैसे अपनी गुल्लक में उड़ेलना चाहती है
वो बस कुछ देर मेरे साथ खेलना चाहती है

अंत में दो पंक्तिया और कहना चाहूँगा कि....
वही बेटा काम है बहुत जरूरी काम है मैं शूटिंग करना जरूरी है
नहीं करूँगा तो कैसे चलेगा ,

जैसे मजबूरी भरे दुनिया दारी के जबाब देने लगता हूँ
वो झूठा ही सही मुझे अहसास कराती है जैसे सब समझ गयी हो
लेकिन आँखें बंद करके रोती है,
सपने में खेलते हुए मेरे साथ सोती है

जिंदगी ना जाने क्यों इतना उलझ जाती है
और हम समझते है कि बेटियां सब समझ जाती है
और हम समझते है कि बेटियां सब समझ जाती है ।

(कविता के वास्तविक रचयिता / कवि – श्री शैलेश लोढ़ा)

रमन कुमार
सहायक अनुभाग अधिकारी

(विभागेत्तर प्रतिभागियों में प्रथम स्थान प्राप्त स्वरचित कविता)

आध्यात्म

अनेक में एक हैं और एक में अनेक समाए,
यह इतना भी कठिन नहीं कि कोई इसे समझ न पाए,
यह आध्यात्म है, कुछ और नहीं,
सच्ची भक्ति है यह, जो धर्म निभाने से कम नहीं।

यह धर्म नहीं पर, हर धर्म में निहित है यही,
पहचान करवाता है कि क्या गलत और क्या सही,
यह किसी धर्म से अलग नहीं,
अधर्म की कोई बात आध्यात्म से जुड़ी नहीं।

आध्यात्मिक थे कबीर जिन्होंने राम-रहीम दोनों कहे,
इस मार्ग पर रहे अडिग जिससे वो कभी न टले,
मीरा, जो गिरधर में ही रम गई,
नामदेव की बिटुल जपते उम्र गई।

ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो हमें समझा गए,
आध्यात्म की मशाल जलाकर रास्ता हमें दिखा गए।

इनमें से किसने हमें किसी धर्म का पाठ पढ़ाया,
प्रीत एक से की और सबमें उसको ही पाया,
यही पराकाष्ठा, लगता है, आध्यात्म से मिल जाती है,
अपना-पराया मिट जाता है, जब उसकी अलख जग जाती है।

दाई आखुर प्रेम का, पढ़े और पढ़ाएं,
हिरन बन, वन में भागें, कस्तूरी को पाएं।

भीड़ से नाता ना हम जोड़ें,
नए-पुराने बंधन तोड़ें,
मन को करें आजाद – स्वच्छ हम,
थोड़ा सा प्रयास करें।

मानवता का संग करें, शान्ति से माहिल भरे,
दूसरों को समझने का मन में हम विचार करें,
यह नन्हा प्रयास करें, जीवन को खुशहाल करें।

हरमिंदर कौर
ओएसडी (बीमा-2 अनुभाग)

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा 17.02.2018 से 05.10.2018 तक विभाग के नियंत्रणाधीन कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण की सूची

क्र.सं.	कार्यालय का नाम	दिनांक
1.	इलाहाबाद बैंक, शाखा कार्यालय, रुद्रप्रयाग	03.05.2018
2.	आईडीबीआई बैंक, शाखा कार्यालय, रुद्रप्रयाग	03.05.2018
3.	बैंक ऑफ बड़ौदा, शाखा कार्यालय, रुद्रप्रयाग	04.05.2018
4.	सिंडिकेट बैंक, शाखा कार्यालय, रुद्रप्रयाग	04.05.2018
5.	पंजाब एंड सिंध बैंक, शाखा कार्यालय, जोशीमठ (ऑली)	05.05.2018
6.	इंडियन ओवरसीज बैंक, शाखा कार्यालय, जोशीमठ (ऑली)	05.05.2018
7.	केनरा बैंक, शाखा कार्यालय, जोशीमठ (ऑली)	05.05.2018
8.	स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, शाखा कार्यालय, जोशीमठ (ऑली)	05.05.2018
9.	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, शाखा कार्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल)	07.05.2018
10.	यूको बैंक, शाखा कार्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल)	07.05.2018
11.	ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, शाखा कार्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल)	07.05.2018
12.	पंजाब नेशनल बैंक, शाखा कार्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल)	07.05.2018
13.	आंध्रा बैंक, शाखा कार्यालय, कोल्लम	22.05.2018
14.	यूनाइटेड इंडिया इश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मंडल कार्यालय, आल्फुष्प, (निरीक्षण कुमारकम में)	23.05.2018
15.	ओरिएंटल इश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मंडल कार्यालय, आल्फुष्प (निरीक्षण कुमारकम में)	23.05.2018
16.	नेशनल इश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मंडल कार्यालय, कोडायम (निरीक्षण कुमारकम में)	24.05.2018
17.	दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, शाखा कार्यालय, मुन्नार	25.05.2018
18.	भारतीय स्टेट बैंक, शाखा कार्यालय, मुन्नार	25.05.2018
19.	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, शाखा कार्यालय, मुन्नार	25.05.2018
20.	भारतीय जीवन बीमा निगम, अविमली (निरीक्षण मुन्नार में)	25.05.2018
21.	सिंडिकेट बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय-2, दिल्ली	28.05.2018

क्र.सं.	कार्यालय का नाम	दिनांक
22.	सिंडिकेट बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, कोयम्बटूर	15.06.2018
23.	कापेरेशन बैंक, आंचलिक कार्यालय, कोयम्बटूर	15.06.2018
24.	भारतीय स्टेट बैंक, प्रशासनिक कार्यालय, कोयम्बटूर	15.06.2018
25.	इंडियन ओवरसीज बैंक, शाखा कार्यालय, ऊटी	18.06.2018
26.	केनरा बैंक, शाखा कार्यालय, ऊटी	18.06.2018
27.	भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, मैसूर	20.06.2018
28.	यूनाइटेड इंडिया इश्योरेंस कं.लि.मंडल कार्यालय-2, इंदौर	24.08.2018
29.	बैंक ऑफ इंडिया, अंचल कार्यालय, इंदौर	24.08.2018
30.	बैंक ऑफ महाराष्ट्र, अंचल कार्यालय, इंदौर	25.08.2018
31.	पंजाब नेशनल बैंक, मंडल कार्यालय, इंदौर	25.08.2018
32.	यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर	25.08.2018
33.	इलाहाबाद बैंक, शाखा कार्यालय, ग्वालियर	29.08.2018
34.	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, ग्वालियर	29.08.2018
35.	भारतीय स्टेट बैंक, प्रशासनिक कार्यालय, ग्वालियर	29.08.2018
36.	नेशनल इश्योरेंस कं.लि., मंडल कार्यालय, आगरा	30.08.2018
37.	बैंक ऑफ बड़ौदा, आंचलिक कार्यालय, दिल्ली	28.09.2018
38.	कापेरेशन बैंक, मुख्य शाखा, गुवाहाटी	04.10.2018
39.	केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, गुवाहाटी	04.10.2018
41.	भारतीय स्टेट बैंक, प्रशासनिक कार्यालय, शिलोंग	05.10.2018

वित्तीय सेवाएं विभाग (रा.भा.) द्वारा नियंत्रणाधीन कार्यालयों का राजभाषायी निरीक्षण

क्र. सं.	कार्यालय (बैंकों/बीमा कंपनियों/वित्तीय संस्थाएं)	निरीक्षण की तारीख
1.	देना बैंक, आंचलिक कार्यालय, दिल्ली	28.11.2017
2.	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय-II, नई दिल्ली	30.11.2017
3.	बैंक ऑफ महाराष्ट्र, अंचल कार्यालय, नई दिल्ली	01.12.2017
4.	एग्रीकल्चर इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली	04.12.2017
5.	पंजाब एंड सिंध बैंक, आंचलिक कार्यालय, गुरुग्राम और दिल्ली-II	05.12.2017
6.	युनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय-I, नई दिल्ली	06.12.2017
7.	भारतीय स्टेट बैंक, प्रशासनिक कार्यालय, गोरखपुर	11.12.2017
8.	कापॉरेशन बैंक, गोरखपुर	11.12.2017
9.	कापॉरेशन बैंक, पडरौना	12.12.2017
10.	इलाहाबाद बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर	13.12.2017
11.	युनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर	12.02.2018
12.	पंजाब एंड सिंध बैंक, आंचलिक कार्यालय, जयपुर	13.02.2018
13.	बैंक ऑफ बड़ौदा, आंचलिक कार्यालय, जयपुर	13.02.2018
14.	ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर	14.02.2018
15.	विजया बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर	14.02.2018
16.	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर	15.02.2018
17.	नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय-III, दिल्ली	23.04.2018
18.	नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय-IV, दिल्ली	24.04.2018
19.	ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून	02.05.2018
20.	नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मंडल कार्यालय, हरिद्वार	08.05.2018
21.	पंजाब नेशनल बैंक, मंडल कार्यालय, हरिद्वार	08.05.2018
22.	सिडिके बैंक, मुख्य शाखा, गोरखपुर	30.05.2018
23.	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर	31.05.2018

क्र. सं.	कार्यालय (बैंकों/बीमा कंपनियों/वित्तीय संस्थाएं)	निरीक्षण की तारीख
24.	बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर	01.06.2018
25.	पंजाब नेशनल बैंक, मंडल कार्यालय, गोरखपुर	02.06.2018
26.	नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय, कोयम्बटूर	14.06.2018
27.	सिडबी बैंक, ऊटी	18.06.2018
28.	कापॉरेशन बैंक, कुन्नूर	19.06.2018
29.	भारतीय स्टेट बैंक, प्रशासनिक कार्यालय, कानपुर	24.09.2018
30.	भारतीय जीवन बीमा निगम, उत्तर मध्य क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर	24.09.2018
31.	भारतीय स्टेट बैंक, स्थानीय प्रधान कार्यालय, लखनऊ	25.09.2018
32.	बैंक ऑफ महाराष्ट्र, अंचल कार्यालय, लखनऊ	25.09.2018
33.	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक एवं क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी	03.10.2018
34.	नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी	03.10.2018
35.	दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मंडल कार्यालय, शिलांग	05.10.2018
36.	नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मंडल कार्यालय, शिलांग	05.10.2018
37.	केनरा बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, शिलांग	06.10.2018
38.	इंडियन बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली	15.10.2018
39.	इंडियन बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, गाजियाबाद	16.10.2018
40.	दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कं.लि. क्षेत्रीय कार्यालय-1, दिल्ली	22.10.2018
41.	दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कं.लि. क्षेत्रीय कार्यालय-2, दिल्ली	23.10.2018
42.	देना बैंक, अंचल कार्यालय, सूरत	24.10.2018
43.	यूको बैंक, अंचल कार्यालय, सूरत	25.10.2018
44.	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट	30.10.2018
45.	कापॉरेशन बैंक, अंचल कार्यालय, राजकोट	31.10.2018

सुबह उठना दुनिया का सबसे मुश्किल काम था उसके लिए, फिर यदि दफ्तर जाने का दिन हो तो यह दुख उसके लिए और भी घना हो जाया करता था। उसे यह भी आश्चर्य होता है कि छोटे-छोटे बच्चे कैसे स्कूल के लिए सुबह-सवेरे तैयार हो जाते हैं। दफ्तर जाने के लिए इन्हीं नन्हें-मुन्नों को याद कर-करके प्रेरणा लेता वह आज तक।

बचपन की सब बातें याद हों ऐसा भी नहीं है पर यह तो पक्का याद है कि स्कूल जाना भी उसे कभी भी अच्छा नहीं लगता। सभी छोटे भाई चले भी जाते तो भी कभी उसका जूते का फीता न लगता तो कभी कापी न मिलती। दादी और माँ जैसे-तैसे उसे स्कूल के लिए भेजा करती थी। स्कूल का द्वार आते-आते मन को खुद ही मनाते हुए क्लास में जा बैठता।

क्लास टीचर "मास्टर जी" लंबे -ऊँचे और गठीले शरीर के हरियाणवी थे। झक्क सफेद धोती-कुर्ता धारी और फ्रौजीकट बालों वाले। सारी क्लास को हॉककर ग्राउंड में प्रार्थना-सभा के लिए उनका ले जाया जाना आज भी साफ याद है उसे। कतारबद्ध छात्रों की लयबद्ध कदमताल उसे खूब अच्छी लगती और "आलस्य काफूर"

डेस्क में उसके साथ बैठने वाला सहपाठी चपल और अच्छे स्वभाव का हुआ करता था। इसलिए अपना तो पता नहीं उस सहपाठी के कारण मास्टर जी भी शायद उसे अच्छे छात्रों में मान लेते थे। साथ बैठता था तो सहपाठी कापी टीपने को भी देता और पढ़ने-पढ़ाने की सलाह भी मिलती रहती।

किताबें जमा करने का शौक था उसे, पर ढंग से कोई किताब पूरी तरह पढ़ी भी हो, उसे याद नहीं पड़ता। हाँ, यहाँ-वहाँ की नई-पुरानी किताबें, मैगजीन, कोमिक्स खूब अच्छे लगते थे उसे। स्लेबस में लगी पुस्तकों को देखकर उसे सांप सूंधने लगता। पढ़ने से ज्यादा उन्हें पुरानी अखबार से जिल्द(कवर) लगाना, सफेद चिट लगाकर उनमें जतन से नाम, कक्षा इत्यादि लिखना अधिक भाता था।

नई किताब मिलती तो उसकी ताजी, भीगी सी सौंधी गन्ध खूब अच्छी लगती, हर बार सोचता कि जल्दी से जल्दी पढ़ डालूँगा इन्हें अबकी बार। सब बच्चों को पीछे छोड़ने का मन में प्रण लेता, लेकिन पता नहीं यह नशा कब फुर हो जाता और अतिसामान्य छात्रों की ही तरह नंबर आते।

हाँ हिन्दी, सामाजिक, इतिहास व संस्कृत अन्य विषयों की अपेक्षा मन को भाते। गणित के मानो-जानो के सिद्धान्तों से उसकी जान जोखिम में रहती। जैसे-जैसे कक्षाओं का क्रम बढ़ता ये सब और खासकर अंग्रेजी दिल का सारा चैन छीन लेते।

यदि हिन्दी-संस्कृत सरीखे आसान व समझ में आने वाले विषय परीक्षा में पास हो जाने का उसमें विश्वास जगाने में सहायक थे तो गणित-विज्ञान भूत पिशाच की तरह जैसे पिंड ही नहीं छोड़ते थे उसका। कितनी ही मगज़मारी करो जान सांसत में ही रहती रही उसकी।

हज़ार पढ़ने-रटने के बाद भी मंदिरों के कई-कई चक्कर लगाने पड़ते। परीक्षा परिणाम आने से पहले सभी भोजन पदार्थ अपना स्वाद खो देते। मन भारी और शरीर के अंग-अंग ढीले पड़ने लगते। माँ उसकी यह हालत देख उसे मोहल्ले के बूढ़े डॉक्टर के पास ले जाती। डॉक्टर को रोग क्या मिलना था बस आराम व सोने की सलाह दे देता, पर ऐसी अवस्था में नींद भी बैर निभाती थी उससे।

रिजल्ट के दिन डाकिया था कि कार्ड लिए-लिए घर-घर जाता, कहीं रुपया, कहीं कोई सौगात पाता, लेकिन उसका दिल था कि दहल-दहल जाता। उसे अचानक याद आया कि अध्यापक शेर सिंह मास्टर ने एक बार माँ को स्कूल में बुला भेजा और माँ से कहा कि आपका बेटा गणित में बहुत कमजोर है। माँ ने भी तपाक से उत्तर दिया कि कैसे हो सकता है, यह तो सारा-सारा दिन सवालियों से ही उलझता रहता है और मेहनत भी खूब करता है।

मास्टर जी का सरपट हरियाणवी अंदाज़ था, बोले- मैंने कब कहा- यह मेहनत नहीं करता। मानो-मत मानो इसका रथ रेत में फंसा पड़ा है, चक्के चलाता तो है यह पर रथ रेत में उलझा रह जाता है इसका।

माँ ने ट्यूशन की मदद से उसकी नैया को जैसे-तैसे पार लगाया हर बार। करुणामयी -ममतामयी इस मातृऋण को लाख जन्मों में भी क्या चुका पाएगा वह ?

घरभर में एकमात्र माँ-स्नेहमयी ऐसी थीं जो उसे दिलासा देती थीं, वरना छोटे भाई बहन तो चुहलबाजी का कोई मौका नहीं छोड़ते थे।

अपनी पढ़ाई के भरोसे नहीं, मंदिरों की चोखटों में माथा रगड़ने और बुजुर्गों की आशीषों के प्रताप से वह मेट्रिक पास हो गया, ऐसा आज भी उसका निश्चित मत है। उसे आज भी खूब याद है प्रमोटेड पास लिखा हर साल का डाक-पोस्टकार्ड और बोर्ड सेर्टिफिकेट के अंग्रेजी-गणित के न्यूनतम अनिवार्य अंक जिनहोने उसकी डूबती-उतरती नाव को किनारे लगाया था।

आज तक समझ न पाया है कि उसका सद्व्यवहार, संगीत के प्रति रुचि, हास्य-कौतुक के प्रति आग्रह, जीव जगत के प्रति लगाव, फूलों-पत्तियों से प्रेम, शिशुओं से स्नेह, हास-परिहास आदि को क्यों कोई विशेषताओं की श्रेणी में नहीं मानता और परस्पर बंधुत्व और समानता-सम्मान, किसी भी उपाधि की उपयोगिता का अंग नहीं बन पाते। इतनी उम्र तक न समझ सका था वह कि आड़े-टेढ़े तर्क और अवैज्ञानिक अंग्रेजी और उसकी उच्चारण शैली उसकी मातृभाषा से अच्छी है तो कैसे ? न खेलने में मददगार न झगड़ने में।

अब वह सीनियर स्कूल में आ गया था। मैट्रिक का वह पुराना साथी उससे पढ़ने में बेहतर था तो उसने कॉमर्स ले लिया और उसका भी साथ छूटा।

छँटे-छँटाए शेष बचे छात्रों को ही आर्ट्स में प्रवेश मिलता था तो चयन करने का प्रश्न ही कहाँ था? उसे भी इतिहास-हिन्दी जैसे सहन संयोजन वाले विषय दे दिए गए। अंग्रेजी पिशाचिनी थी कि छाया की तरह चिपकी रही। खुद ब खुद मन और आत्मा को मनाया कि इसे रट-घोंट कर ईश्वरीय कृपा के भरोसे पास कर लेंगे। नए जोश से और दुस्साहस जुटाकर नई क्लास में आने पर रेज्युलेशन लेना और जाने कब बख्त के साथ-साथ उसे भुला देना, यही नित्य नियम जारी रहा, अब भी तो है।

पढ़ने के अलावा जीवन का अन्य हर काम मन को खूब भाता। ऐसा करते -करते कब फाइनल आ जाते, पता ही नहीं चलता। मन था कि गफलत के नित नए बहाने ढूँढ लेता। शेष रहे महीने के लिए टाइम-टेबल बनाए जाते। उसे ही अंतिम रूप देते-देते अब 15 दिन और कट जाते। शेष 15 दिनों को 5 विषयों यानि 3-3 दिन तैयारी के लिए बांटा जाता। मन ही मन व्रत लिया जाता कि दिन-रात एक कर देंगे, नींद थकान को धत्ता बता देंगे आदि-आदि। दो एक घंटे की पढ़ाई से ज्ञान चक्षु खुल जाते और स्पष्ट हो जाता कि मूल पुस्तकें पढ़ने का दम-खम और बख्त अब शेष नहीं। अब कुंजियाँ बटोरी जाती। दोस्तों से नोट साझा किए जाते और

अच्छे अंकों की संभावनाएं तंग हो जाने पर 50 फीसदी का लक्ष्य रखकर कुंजियाँ घोंटी जाती और कयास लगते कि जो प्रश्न पिछले वर्ष पूछे गए हों वे इस बार क्योंकर पूछे जाएंगे ? इससे बचे प्रश्नों पर ध्यान केन्द्रित करने की मानसिक तैयारी होती।

परीक्षा के 5 या 6 दिन रहते परीक्षा की डेट शीट और बीच-बीच में पड़ने वाली छुट्टियों के अनुसार मंसूबे बनने लगते। जिन विषयों के बीच 2 या 4 दिनों का अंतराल या छुट्टी रहती वे फिर पिछली सीट में धकेल दिए जाते और शुरू में होने वाले पेपरों की पढ़ाई तेज हो जाती।

परीक्षा में हमारे आस-पास और खासकर ,आगे-पीछे कौन-कौन से छात्र बैठेंगे, इसकी भी खोजबीन होती। आगे कोई अच्छा छात्र हो तो मन को अकथ्य शांति सी भी मिलती थी उसे ।

50% का लक्ष्यधारी वह महारथी जैसे-तैसे परीक्षा रूपी महासमर से जाने कैसे पार पा जाता। हर परीक्षा में उसे सिंह के जबड़े में फंस जाने जैसा और पास होना चीर हरण (लाज के) बच जाने जैसा लगता ।

कम नंबर या रैस में धीमे रहने का गम धीरे-धीरे जाता रहता। गणित, जिससे वह इतनी खार खाता था, उसे जीवन के इस सवाल का पक्का समाधान दे गया कि अंतिम परिणाम ही महत्वपूर्ण होते हैं, शेष सब निस्सार ।

अंग्रेजी चाहे उसे कितनी ही बेढंगी और बेतुकी क्यों न लगती रही हो, लेकिन विसंगतियों के साथ जीते रहने और कष्ट को मुकुट समान पहनकर सभ्य बने रहने का सलीका सीखा गई। नक्कारखाने में सुगम संगीत कौन सराहेगा ।

राह चलते-चलते कब वह स्कूल वाली गली में जा पहुंचा, उसे पता ही नहीं चला । छुट्टी की घंटी ज़ोर से बजी और छात्रों का हुजूम स्कूल के द्वार से ज्वार सा बह निकला। कोलाहल, चुहलबाजी, अट्टाहास आस-पास जीवंत हो उठा। सब एक-एक कर छिटक गए कोई समूह में तो कोई अकेले ।

उसके चेहरे पर खुशी मिश्रित मुस्कराहट तैर गई। सबमें अपने को और अपने में सबको महसूस करना उसे अपने उसी बचपन में ले गया जो अब अतीत है। खर्ची के लिए माँ को मनाने जैसा, खट्टी-मीठी इमली जैसा, शकरकंदी पर लगी चटनी जैसा.....जैसा.....जैसा आलौकिक सुख ।

असीम प्रकाश नंदी

राजभाषा अधिकारी (न्यू इंडिया एशोरस)

" फिर अंधेरी रात "

(एक गरीब मजदूर का बेटा जब बड़ा अधिकारी बन गया)



कर्ज का बोझ ढोकर हमने कभी,
सींचा था जिस वृक्ष को,
आज वह इतना बड़ा हो गया है कि,
मिलती छाँव तक हमको नहीं ॥

हमने सोचा था कि हमारी पौध,
एक दिन अवश्य हरी-भरी होगी,
शिक्षित होकर, सभ्य बन कर,
हमारी परवरिश हेतु खड़ी होगी ॥

बहुत बड़ी अट्टालिका ने खरीदा है,
हमारे उस ऊंचे सफेदपोश पौधे को,
इस लिए उस पौधे को मस्ती में,
अपनी जमीं तक नजर आती नहीं ॥

अंबर वाले खरीदते रहते हैं ,
हम जमीं से उठ कर बिकते रहते हैं ,
भूल जाते हैं, अपने मालियों को,
पोषकों का शोषण करते रहते हैं ॥

आज मुझे विश्वास नहीं होता,
अपनी उन आंखों और यादों पर,
हमने कभी सोचा भी नहीं था,
कि हमारी इतनी किरकिरी होगी ॥

जिन दीपों को भरा था,
पसीने के तेल से हमने,
जिस्म की दड़ीर से बत्ती बनाई थी बट कर,
जिये थे हम दोनों, सिसकियाँ भर कर,
क्या पता था कि -" रात फिर अंधेरी होगी " ॥

घनश्याम मीणा (राजभाषा अधिकारी)

दि न्यू इंडिया एशोरस कंपनी लिमिटेड

वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा जारी कुछ महत्वपूर्ण परिपत्र

सं. 11014/3/2017- हिंदी
भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
वित्तीय सेवाएं विभाग

जीवन दीप भवन, नई दिल्ली
12 जून, 2018

सेवा में,

अध्यक्ष/अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक/मुख्य कार्यकारी अधिकारी
सरकारी क्षेत्र के सभी बैंक

विषय: वित्तिन संस्थाओं में हिंदी पटों में एकपक्षता जाने के संबंध में।
महोदय/महोदय,

सर्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में हिंदी पटों में एकपक्षता जाने के लिए आइबीए से एक संशोधित गठित करने एवं इस संबंध में समुचित निर्णय लेने के लिए अनुरोध किया गया था। भारतीय बैंक संघ (आईबीए) ने 18 मई, 2018 के अपने पर सं. एचआरएचआईआर बीआरकेगाव/ 5112 के द्वारा यह सूचित किया है कि सर्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में हिंदी पटों में एकपक्षता जाने के लिए दिनांक 10.04.2018 को आइबीए बरखोव में बैंकों के महाप्रबंधक/प्रशासिकाओं की एक बैठक आयोजित की गई थी, जिसमें उक्त विषय पर विस्तार से विचार-विमर्श करने के परवृत्त निम्नलिखित सुझाव दिए गए थे:-

- (क) सर्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में राजभाषा विभाग का विभागाध्यक्ष उप महाप्रबंधक भेरी का हो।
 - (ख) उक्त विभाग में पचोपस्था संस्था में सहायक महाप्रबंधक/मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) पदस्थ हो और सहायक महाप्रबंधक/मुख्य प्रबंधक/प्रबंधक आदि की रिक्तियां समत-समत पर भरी जाएं।
 - (ग) राजभाषा विभाग के विभागाध्यक्ष का पदनाम मुख्य राजभाषा अधिकारी हो।
 - (घ) राजभाषा विभाग एक अलग संघभाग (वर्गिक) हो। उक्त विभाग में पदस्थ अधिकारियों को बिजनेस स्टिकर के स्टिकर पैटर्न से अलग रखा जाए, जिससे राजभाषा विभाग में रिक्तियों को निरंतर भरने की प्रक्रिया नियमित अंतराल पर पटोन्मिति के माध्यम से पूरी की जा सके।
- अनुवृत्त सुझावों को आइबीए की वर्ष संश्लि में दिनांक 27.04.2018 को आयोजित अपनी बैठक में अनुमोदित कर दिया है। आइबीए द्वारा दिए गए उपवृत्त सुझावों को इस संशोधन के साथ संश्लि प्रदान की जाती है कि सर्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के राजभाषा विभाग के विभागाध्यक्ष का नाम उप महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी रखा जाए एवं राजभाषा संघर्ष के अन्य अधिकारियों के पदनाम के साथ कोष्ठक में 'राजभाषा' लिखा जाए, यथा सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), प्रबंधक (राजभाषा) एवं सहायक प्रबंधक (राजभाषा)।

तदनुसार भारतीय बैंक संघ (आईबीए) के सुझावों को उपवृत्त संशोधन के साथ तत्काल प्रभाव से लागू किया जाता है। अतः अनुरोध है कि सर्वजनिक क्षेत्र के सभी बैंक इस संबंध में तत्काल समुचित कार्रवाई सुनिश्चित करें तथा की गई कार्रवाई की सूचना इस विभाग को अधिक से अधिक 30/06/2018 तक भिजवाना सुनिश्चित करें।

इसे सचिव (वित्तीय सेवाएं) के अनुमोदन से जारी किया जाता है।

अवधी,
(सैनेस कुमार सिंह)
संयुक्त निदेशक (रा.भा.)
दूरभाष: 011-23360784

प्रतिनिधि: भारतीय बैंक संघ, वल्टे ट्रेड सेंटर, उका तल, फ्लैट - 1 बिल्डिंग, वल्टे ट्रेड सेंटर कॉम्प्लेक्स,
कक पेरु, मुम्बई - 400 005 को इस अनुरोध के साथ कि इस सुझावों के यथाशीघ्र कार्यान्वयन हेतु सभी बैंकों को समुचित दिशानिर्देश जारी किए जाएं।

सं. 11014/3/2017-हिंदी
भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
वित्तीय सेवाएं विभाग

जीवन दीप भवन, संसद मार्ग
नई दिल्ली, दिनांक 20 जून, 2018

सेवा में,

हिंदी गवर्नर/ अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक/मुख्य कार्यकारी अधिकारी
भारतीय रिजर्व बैंक/सरकारी क्षेत्र के सभी बैंकों/बीमा कंपनियों/वित्तीय संस्थाएं/भारतीय बीमा वित्तियमक और विकास प्राधिकरण/नियम विनियामक और विकास प्राधिकरण/आईएफसीआई/आईएफसीएस

विषय: बैंकों/बीमा कंपनियों/वित्तीय संस्थाओं में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की प्रगति की निगरानी के लिए दिनांक 06.07.2018 को आयोजित तृतीय समीक्षा बैठक का कार्यवृत्त।

महोदय/महोदय

बैंकों/बीमा कंपनियों/वित्तीय संस्थाओं में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की प्रगति की निगरानी के लिए संयुक्त सचिव (बीकेए) की अध्यक्षता में दिनांक 06.07.2018 को आयोजित तृतीय समीक्षा बैठक के कार्यवृत्त की प्रति सूचना एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु संलग्न है। अनुरोध है कि कार्यवृत्त की विभिन्न मंटी पर यथापेक्षित कार्रवाई सुनिश्चित की जाए और कृत कार्रवाई की सुस्पष्ट एवं भट-भर पूर्ण रिपोर्ट इस विभाग को यथाशीघ्र भेज दी जाए।

कृपया यह सुनिश्चित किया जाए कि अनुवृत्त कार्रवाई की रिपोर्ट में 'नोट किया गया', 'कार्रवाई की जा रही है', आदि जैसी टिप्पणी न की जाए तथा उसमें स्थिति को स्पष्ट रूप से दर्शाते के लिए आवश्यकतानुसार तथ्यात्मक आंकड़े दिए जाएं।

अवधी,
(सैनेस कुमार सिंह)
संयुक्त निदेशक (रा.भा.)
दूरभाष: 011-23360784
मो. नं. 9868638435

प्रतिनिधि:

1. निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, एनडीसीसी भवन, चतुर्थ तल, जय सिंह रोड, नई दिल्ली।
2. अध्यक्ष, भारतीय बैंक संघ (आईबीए), वल्टे ट्रेड सेंटर कॉम्प्लेक्स, कक पेरु, मुम्बई-400 005।
3. अध्यक्ष, साधारण बीमा सर्वजनिक क्षेत्र संघ (विष्णु), भूतल, जीवन तारा भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली-01

अति तत्काल/अत्यवश्यक
अनुममक

संख्या 11014/3/2017-हिंदी
भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
वित्तीय सेवाएं विभाग

जीवन दीप भवन, संसद मार्ग
नई दिल्ली, 10 जून, 2018

सेवा में,

बी.ए.सी. निदेशक कुमल,
(अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक ऑरिएण्टल इन्शोरेंस कंपनी लि.)
अध्यक्ष निष्ठा,
ऑरिएण्टल इन्स, ए - 25/27,
आसफ अली रोड, नई दिल्ली - 110 002

विषय: बीमा कंपनियों में राजभाषा संघर्ष का वृद्धि एवं हिंदी पटों में एकपक्षता लागू - हिंदी संघर्ष के अधिकारियों को मुख्य प्रबंधक स्तर तक पटोन्मिति के संबंध में।

महोदय

कृपया उपवृत्त विषय पर इस विभाग के 20 जून, 2018 के समत-समत पर यह अनुरोधन करें, जिसके साथ उक्त समीक्षा बैठक का कार्यवृत्त यथापेक्षित अनुवृत्त कार्रवाई के लिए सभी बैंकों/बीमा कंपनियों/वित्तीय संस्थाओं को प्रेषित किया गया था। संयुक्त सचिव (बीकेए) की अध्यक्षता में 6 जून, 2018 को पटना में आयोजित समीक्षा बैठक में अन्य निर्णयों के साथ-साथ यह भी निर्णय लिया गया था कि बैंकों की तरफ से बीमा कंपनियों में भी राजभाषा संघर्ष के अधिकारियों को सहायक संघर्ष के अधिकारियों की तरफ वन से कम मुख्य प्रबंधक स्तर तक पटोन्मिति दिए जाने का प्रस्ताव किया जाए। (कार्यवृत्त की प्रति सुलभ सार में लिए संलग्न है।)

इस संबंध में मैं आपको यह अवगत कराना चाहूंगा कि सर्वजनिक क्षेत्र के सभी बैंकों में हिंदी पटों में एकपक्षता लागू के लिए भारतीय बैंक संघ (आईबीए) के द्वारा यह निर्णय लिया गया है कि सर्वजनिक क्षेत्र के सभी बैंकों में राजभाषा विभाग का विभागाध्यक्ष उप महाप्रबंधक भेरी का हो एवं राजभाषा विभाग में पचोपस्था संस्था में सहायक महाप्रबंधक/मुख्य प्रबंधक को तैनात किया जाए। आइबीए द्वारा यह भी निर्णय लिया गया कि वृत्ति राजभाषा विभाग एक अलग संघभाग है, अतः राजभाषा विभाग में पदस्थ अधिकारियों को बिजनेस स्टिकर के स्टिकर पैटर्न से अलग रखा जाए ताकि राजभाषा विभाग की रिक्तियां पटोन्मिति के माध्यम से निरंतर भरी जा सकें (आईबीए के पर की पटो सुलभ सार में लिए संलग्न है।)

अतः अनुरोध है कि 6 जून, 2018 को पटना में आयोजित समीक्षा बैठक में अध्यक्ष महोदय द्वारा दिए गए दिशानुसार सभी बीमा कंपनियों में भी हिंदी पटों में एकपक्षता लागू के लिए बीमा कंपनियों में राजभाषा संघर्ष का वृद्धि करने एवं राजभाषा संघर्ष के अधिकारियों को मुख्य प्रबंधक स्तर तक पटोन्मिति दिए जाने के संबंध में सभी बीमा कंपनियों के साथ यथाशीघ्र बैठक कर अपेक्षित कार्रवाई तत्काल की जाए। तदनुसार इस संबंध में लिए गए निर्णय से विभाग को यथाशीघ्र अवगत करने का कष्ट करें।

संलग्नक: यथापेक्षित

अवधी,
(सैनेस कुमार सिंह)
संयुक्त निदेशक (रा.भा.)
दूरभाष: 011-23360784
मो. नं. 9868638435

प्रतिनिधि: सुबी भूतिश बरु, संयुक्त निदेशक (बीमा - 1) एवं 11 को उपवृत्त निर्णय पर यथापेक्षित कार्रवाई यथाशीघ्र सुनिश्चित करवाते के लिए।

सं. 11011/3/2018 - हिंदी
भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
वित्तीय सेवाएं विभाग

जीवन दीप भवन, नई दिल्ली
25 अक्टूबर, 2018

कार्यालय साधन

विषय: केन्द्रीय हिंदी समिति की 31वीं बैठक में लिए गए निर्णयों पर अनुवृत्त कार्रवाई।

माननीय प्रधानमंत्री जी की अध्यक्षता में दिनांक 08/09/2018 को आयोजित केन्द्रीय हिंदी समिति की 31वीं बैठक में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए सदस्यों द्वारा दिए गए सुझावों एवं माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा लिए गए निर्णयों के संदर्भ में सरकारी काम-काज में हिंदी को अधिकाधिक बढ़ावा देने के लिए उक्त बैठक के कार्यवृत्त के निम्नलिखित मंटी पर यथापेक्षित कार्रवाई अपेक्षित है:-

मद सं. सुझाव/निर्णय

- 4.8 'क' क्षेत्र में अंग्रेजी को रोका जाए, हिंदी को बढ़ाया जाए।
- 4.9 एक मंत्रालय से दूसरे मंत्रालय के बीच पत्राचार हिंदी में ही किया जाए।
- 4.10 हिंदी के विज्ञापनों पर 50% के व्यय का कटौती से पालन किया जाए।
- 4.11 निदेश स्थित कार्यालयों में हिंदी की समीक्षा की जाए।
- 5.5 सचिवालय स्तर पर हिंदी कार्य को बढ़ाया जाए।
- 10.4 जहां-जहां हिंदी के पद रिक्त हैं, उन्हें शीघ्र भरा जाए।
- 14.3 हिंदी के उपयोग को बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीक का सहारा लिया जाना चाहिए।
- 14.5 सरकारी हिंदी और सामाजिक हिंदी का अंतर कम करें।
- 14.6 दूसरी भाषाओं के अच्छे शब्दों को हिंदी में ग्रहण करें।
- 14.9 सरकारी भाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में बाधक है। कई बार अनुवाद कठिन भाषा में किया जाता है। इस विषय को गंभीरता से देखना चाहिए और अनुवाद की भाषा सरल सुनिश्चित करनी चाहिए।

(राजीव कुमार)
सहायक निदेशक (रा.भा.)

वित्तीय सेवाएं विभाग में सभी अधिकारियों/अनुमम

प्रतिनिधि: सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, एनडीसीसी - 11 बिल्डिंग, तृतीय तल, जय सिंह रोड, नई दिल्ली को सूचनाएं



विश्व हिंदी सम्मेलन

मॉरीशस, १८-२० अगस्त, २०१८



भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
वित्तीय सेवाएँ विभाग